



ई-रिक्शा पलटने के कारण चालक की मौत झज्जर। शहर के कुलदीप चौक पर ई-रिक्शा पलटने के कारण आई गंभीर चोटों के चलते ई-रिक्शा चालक की मौत हो गई। मृतक की पहचान शहर के खारी कुई मौहल्ला निवासी करीब चालीस वर्षीय दीपक पुत्र राय सिंह के तौर पर हुई है। जानकारी के अनुसार दीपक ई-रिक्शा चलाने का काम करता है। जब वह शनिवार की देर शाम ई-रिक्शा चलाता हुआ कुलदीप चौक से गुजर रहा था वहां उबड़-खाबड़ रास्ता होने के कारण उसकी ई-रिक्शा का संतुलन बिगड़ गया और वह पलट गई। इस घटना में दीपक रिक्शा के नीचे दब गया और गंभीर रूप से घायल हो गया।

अवैध हथियार सहित आरोपी काबू, केस दर्ज बहादुरगढ़। पुलिस की अपराध चक्र शाखा प्रथम ने अवैध हथियार सहित काबू किया। आरोपी की पहचान अमन के रूप में हुई है। बांबे वाली गली का रहने वाला है। मेला ग्राउंड के पास से उसे पकड़ा गया। उसके पास देशी पिस्तौल मिली। आरोपी के खिलाफ सिटी थाने में केस दर्ज किया गया है। मामले में जांच जारी है।

कार्यकर्ता सम्मेलन का निमंत्रण दिया

बहादुरगढ़। सोहना में आगामी 6 सितंबर को प्रस्तावित सम्मेलन को लेकर बहुजन समाज पार्टी के कार्यकर्ता जोर शोर से तैयारी में जुटे हैं। गांव-गांव जाकर लोगों को निमंत्रण दिया जा रहा है और कार्यकर्ताओं की ड्यूटी लगाई जा रही है। इसी कड़ी में पदाधिकारियों ने सोलधा, नयागांव, मातनहेल, रुढ़ियावास, नोगांव, बहुश्रौलरी, झज्जर सहित अन्य गांवों में जनसंपर्क किया। प्रदेश महासचिव हेमचंद्र मेहरा और जिला अध्यक्ष सतबीर जाखोदा की देखरेख में बहादुरगढ़, बेरी, बादली और झज्जर विधानसभा क्षेत्र में पदाधिकारियों को जिम्मेदारियां सौंपी गईं। सतबीर जाखोदा ने कहा कि ऐसे आयोजनों के माध्यम से संगठन को जमीनी स्तर पर मजबूत करने और कार्यकर्ताओं को सक्रिय करने पर जोर दिया जा रहा है।

मोबाइल के बदले पत्थर थमाने वाले पर केस दर्ज

झज्जर। शहर की धर्म मार्केट में मोबाइल के बदले कांच व पत्थर थमाकर लोगों के साथ ठगी करने के मामले में पीड़ित व्यक्ति द्वारा पुलिस को शिकायत दर्ज कराई है। दी गई शिकायत में मूल रूप से आसाम के रहने वाले प्रकाश टाटी ने बताया कि वह फिलहाल झज्जर क्षेत्र में किराए पर रहता है और फारुखनगर की एक निजी कंपनी में कार्यरत है। वह शनिवार की दोपहर बाढ़ करीब तीन बजे सिलानी गेट क्षेत्र की एक दुकान पर आधार कांड से रुपये निकलवाने गया था।



बहादुरगढ़। निर्माण कार्य का शुभारंभ करते विधायक राजेश जून।

बराही में 18 लाख से गली और नाले का निर्माण शुरू बहादुरगढ़। गांव बराही में रविवार को 18 लाख रुपये की लागत से बनने वाली गली व नाला निर्माण कार्य का शुभारंभ विधायक राजेश जून ने ग्रामीणों के साथ नरियल फोड़कर किया। ग्रामीणों ने विधायक का फूलमालाओं से स्वागत किया। विधायक राजेश जून ने मौके पर निर्माण कार्य का निरीक्षण करते हुए ठेकेदार को गुणवत्ता का विशेष ध्यान रखने के निर्देश दिए। उन्होंने सरपंच व ग्रामीणों से भी कार्य की निगरानी रखने और निर्माण सामग्री की गुणवत्ता में कमी मिलने पर तुरंत सूचना देने की अपील की। इस अवसर पर वाम सरपंच, कार्यकर्ता व काफी संख्या में ग्रामीण मौजूद रहे।

गोवंश से लेकर इंसानों तक की जान पर खतरा, जिम्मेदार विभाग नहीं ले रहे सबक

खुले नाले बन रहे जानलेवा, हादसों के बाद भी जिला प्रशासन बेपरवाह

हरिभूमि न्यूज़ ►► बहादुरगढ़

बदहाल निकासी व्यवस्था सिर्फ गंदगी और जलभराव की समस्या नहीं, बल्कि यह लोगों तथा बेजुबानों की जान के लिए भी खतरा साबित हो रही है। शहर में जगह-जगह जर्जर और खुले नाले हादसों को न्योता दे रहे हैं। इन नालों में गिरकर आए दिन गोवंश व अन्य पशु गिर रहे हैं। कई बार तो जान तक चली जाती है। इतना ही नहीं, खुले नालों में गिरकर आम नागरिकों की भी मौत हो चुकी है। लगातार हो रहे हादसों के बावजूद भी सबक नहीं लिया जा रहा। बीती रात को झज्जर रोड पर भी एक घटना हुई। यहां कृष्णा नगर के पास खुले नाले में गोवंश गिर गया। जीव प्रेमियों ने काफी जद्दोजहद के बाद उसे निकाला और फिर इलाज किया। अगर समय रहते नजर नहीं पड़ती तो गोवंश की जान भी जा सकती थी। दरअसल, झज्जर रोड स्थित यह नाला बेहद गहरा है और जर्जर अवस्था में है। आसपास घास, खरपतवार व कचरे

के कारण नजर नहीं आता। इस वजह से यह प्राण घातक साबित हो सकता है। खैर, यह पहला मामला नहीं है। शहर के अलग-अलग हिस्सों में खुले नालों में गोवंश और अन्य पशुओं के गिरने की घटनाएं सामने आती रही हैं। कई बार नजर न पड़ने के कारण पशु घंटों या कई दिनों तक नालों में फंसे रहते हैं और उनकी मौत तक हो जाती है। इन नालों का खतरा इंसानों के लिए भी उतना ही गंभीर है। आम नागरिक भी नालों में कई बार गिर चुके हैं। कुछ समय पहले देवीलाल पार्क के साथ लगते खुले नाले में प्रवासी युवक की गिरकर मौत हुई थी। जबकि सेक्टर 14 में नाले की सफाई के दौरान 1 युवक का कंकाल मिला था। स्थानीय लोगों का कहना है कि नालों की सफाई जरूरी है, लेकिन सफाई के बाद उन्हें खुला छोड़ देना बड़ी लापरवाही है। जब सफाई के लिए स्लैब हटाए जाएं तो काम पूरा होते ही उन्हें दोबारा लगाया जाना चाहिए। जहां नाले बेहद गहरे हैं, वहां मजबूत स्लैब के साथ सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम किए जाने चाहिए।



बहादुरगढ़। झज्जर रोड पर खुला पड़ा गहरा नाला,

हादसे से पहले समाधान करे प्रशासन

शहर के निवासी सुशील राठी ने कहा कि समाजसेवी संस्थाएं और स्थानीय लोग कई बार प्रशासन के सामने खुले नालों का मुद्दा उठा चुके हैं। इन्हें ढकने की मांग कर चुके हैं। प्रशासन की किसी बड़े हादसे का इंतजार नहीं करना चाहिए। जहां खतरा दिखाई दे रहा है, वहां हादसा होने से पहले ही समाधान किया जाना चाहिए।

खुले नालों का सर्व कर तुरंत ढकें

अनूप कुमार ने कहा कि नगर परिषद और संबंधित विभाग शहर के सभी नालों का भौतिक सर्वे कराकर उनकी स्थिति की सूची तैयार करें। खतरनाक और खुले नालों को चिह्नित कर तत्काल ढकने की कार्रवाई हो। साथ ही सफाई के बाद स्लैब वापस लगाने की जिम्मेदारी भी तय की जाए।

सुरक्षित शहर के लिए वैज्ञानिक निकासी जरूरी

प्रथम ने कहा कि बेहतर निकासी व्यवस्था का मतलब केवल पानी की निकासी नहीं, बल्कि सुरक्षित और व्यवस्थित शहर भी है। नालों को वैज्ञानिक तरीके से बनाया जाए, उनकी नियमित सफाई हो और खुले हिस्सों को सुरक्षित किया जाए, तभी समस्या का स्थायी समाधान संभव है।

कानोन्दा में देर रात फायरिंग, दो भाई घायल

हरिभूमि न्यूज़ ►► बहादुरगढ़

गांव कानोन्दा में रविवार की रात झगड़े के दौरान गोलियां लगने से 2 सगे भाई गंभीर रूप से घायल हो गए। उन्हें बहादुरगढ़ के नागरिक अस्पताल में भर्ती कराया गया है। पुलिस ने मामले में छानबीन शुरू कर दी है। जानकारी के मुताबिक, रविवार की रात को गांव में 2 पक्षों के बीच किसी बात पर विवाद गहरा गया। मामला इतना बढ़ा की गोलियां चल गईं। गांव का निवासी साहिल और उसका भाई मोहित गोली लगने से घायल हुए। आनन फानन में उनको नागरिक अस्पताल में लाया गया, जहां उनका उपचार शुरू हुआ। सूचना पाकर सदर थाना प्रभारी टीम सहित मौके पर पहुंचे और जांच शुरू की। घायलों के बयान लिए। साहिल को एक गोली लगी है, जबकि मोहित को हाथ व कमर के पास छर्रे के निशान मिले हैं। गोली किन



परिस्थितियों में चलाई गई, ये फिलहाल सवाल बना हुआ है। जांच के बाद असल स्थिति स्पष्ट हो सकेगी। उधर, सदर थाना प्रभारी मनोज कुमार का कहना है कि

छोटा सा विवाद बड़े झगड़े में बदला

कानोन्दा में झगड़े के दौरान 2 भाइयों को गोली लगने की सूचना मिली थी। मामले में जांच शुरू कर दी गई है। जल्द ही आरोपी को गिरफ्तार कर मामला सुलझा लिया जाएगा।

लगातार बिजली कटौती पर पार्षद ने जताया रोष

हरिभूमि न्यूज़ ►► बहादुरगढ़

वार्ड-13 में लगातार हो रही बिजली कटौती को लेकर इनेलो नगर पार्षद मोहित राठी ने बिजली निगम के प्रति रोष जताया है। उन्होंने कहा कि बार-बार पानी की सप्लाई के समय बिजली बंद होने से वार्डवासियों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। राठी ने बताया कि अधिकारियों को कई बार समस्या से अवगत कराया जा चुका है, लेकिन स्थायी

समाधान नहीं हुआ। उन्होंने कहा कि वार्ड में बिजली व्यवस्था सुधारने के लिए 50 से अधिक नए ट्रांसफॉर्मर लगवाए गए हैं और आगे भी समस्याओं के समाधान के लिए प्रयास जारी रहेंगे। उन्होंने चेतावनी दी कि जल्द समस्या का समाधान नहीं हुआ और पानी की सप्लाई के समय बिजली कटौती नहीं रुकी तो वार्डवासियों के हित में विभाग के खिलाफ बड़ा जनआंदोलन किया जाएगा।



पार्षद मोहित राठी

वाटरपोलो में हरियाणा की बेटियों का दबदबा

हरिभूमि न्यूज़ ►► बहादुरगढ़

एचएल सिटी स्थित चैंपियंस एक्वेटिक एकेडमी के स्विमिंग पूल में आयोजित 8वीं कैप्टन कार्तिकेय हुड्डा मेमोरियल नॉर्थ जोन वाटरपोलो चैंपियनशिप का समापन हो गया। महिला वर्ग के फाइनल में ईक्क्स क्लब ने शाह सतनाम सिरसा को हराकर खिताब अपने नाम किया। विजेता टीम को 35 हजार रुपये नकद, स्वर्ण पदक, ट्रॉफी और प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। शाह सतनाम सिरसा की टीम उपविजेता रही, जिसे 25 हजार रुपये और रजत पदक मिला। व्हाइट टाइगर्स रामराय ने तीसरा स्थान हासिल करते हुए 15 हजार रुपये और कांस्य पदक जीता। पुरुष वर्ग में पंजाब की टीम ने शानदार प्रदर्शन करते हुए स्वर्ण पदक हासिल किया। ब्लैक पैथर ईक्क्स हरियाणा की टीम को रजत, जबकि व्हाइट टाइगर्स रामराय हरियाणा को कांस्य पदक मिला। तीनों स्थान प्राप्त करने वाली टीमों को क्रमशः 35 हजार, 25 हजार और 15 हजार रुपये की नकद पुरस्कार राशि



बहादुरगढ़। विजेता टीम को सम्मानित करते अतिथि।

दी गई। महिला वर्ग में अनिशा को सर्वश्रेष्ठ गोलकीपर और नव्या को सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी चुना गया। पुरुष वर्ग में चैतेन्य सर्वश्रेष्ठ गोलकीपर और विद्वान्सु सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी रहे। हरियाणा ओलंपिक एसोसिएशन के उपाध्यक्ष एवं हरियाणा तैराकी संघ के महासचिव अनिल खत्री की देखरेख में हुए आयोजन में एक्साइज एंड टेक्सेशन विभाग के पूर्व कमिश्नर सतबीर सिवाच मुख्य अतिथि रहे।



बहादुरगढ़। गृहमंत्री अमित शाह के साथ आर्यन, विराट, पारस व सूर्या।

इसू अध्यक्ष आर्यन ने भाइयों संग की गृहमंत्री अमित शाह से मुलाकात

हरिभूमि न्यूज़ ►► बहादुरगढ़

दिल्ली विश्वविद्यालय छात्र संघ के अध्यक्ष एवं एबीवीपी नेता आर्यन मान ने अपने बड़े भाइयों विराट मान, पारस मान और सूर्या मान के साथ केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह से दिल्ली में शिष्टाचार भेंट की। इस दौरान युवाओं की आकांक्षाओं, छात्र हितों और राष्ट्र निर्माण में युवा भागीदारी को लेकर चर्चा हुई। गृह मंत्री अमित शाह ने इस अध्यक्ष बनने पर आर्यन मान को बधाई दी। आर्यन मान ने विश्वविद्यालय परिसरों में छात्रों से जुड़े मुद्दों, उच्च शिक्षा की गुणवत्ता और छात्र कल्याण से

संबंधित विषय गृह मंत्री के समक्ष रखे। विराट मान, पारस मान और सूर्या मान ने राष्ट्र निर्माण व देश के विकास में युवाओं की भूमिका पर अपने विचार साझा किए। अमित शाह ने चारों भाइयों के आपसी प्रेम और भाईचारे की सराहना करते हुए संयुक्त परिवारों को समाज की ताकत बताया। उन्होंने युवाओं से सकारात्मक सोच के साथ समाज को मजबूत करने और देश की प्रगति में योगदान देने का आह्वान किया। मुलाकात के दौरान मान भाइयों ने देश और समाज के उत्थान में निरंतर योगदान देने का संकल्प व्यक्त किया।

समानांतर बिजली वितरण लाइसेंस के विरोध में ज्ञापन दिया

हरिभूमि न्यूज़ ►► बहादुरगढ़

बिजली कर्मचारी व इंजीनियर संयुक्त संघर्ष मोर्चा के आह्वान पर कर्मचारियों ने गुरुग्राम, नूंह जिलों में निजी कंपनी को समानांतर विद्युत वितरण लाइसेंस दिए जाने के प्रस्ताव के विरोध में रविवार को विधायक कार्यालय में ज्ञापन दिया। प्रधान बंसी लाल ने कहा कि गुरुग्राम और नूंह में निजी कंपनी इलेवन पावर प्राइवेट लिमिटेड को समानांतर वितरण लाइसेंस देने का प्रस्ताव प्रदेश की मौजूदा बिजली वितरण व्यवस्था को प्रभावित कर सकता है। प्रधान बिजेंद्र फोगाट ने कहा कि निजी कंपनी द्वारा अधिक राजस्व वाले औद्योगिक और शहरी क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करने से चोरी-पिकिंग की स्थिति बन सकती है।



बहादुरगढ़। विधायक कार्यालय में ज्ञापन देने पहुंचे बिजली कर्मी।

बिजली वितरण में सभी वर्गों के हित प्राथमिकता

यदि सरकारी निगम पर सामाजिक दायित्व और निजी क्षेत्र पर लाभ वाले क्षेत्रों का भार रहा तो मंदिर में इसका आर्थिक असर आम उपभोक्ताओं पर पड़ सकता है। बिजली केवल व्यावसायिक सेवा नहीं, बल्कि आम जनता की मूलभूत आवश्यकता है, इसलिए इसके वितरण से जुड़े किसी भी निर्णय में सभी वर्गों के हितों को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। प्रधान रविन्द्र द्वाला ने मांग की कि समानांतर वितरण लाइसेंस पर अंतिम निर्णय लेने से पहले बिजली कर्मचारियों व इंजीनियरों, किसान संगठनों, उपभोक्ता संगठनों तथा अन्य संबंधित पक्षों की आपत्तियों और सुझावों पर गंभीरता से विचार किया जाए। इस अवसर पर कई कार्यकर्ता मौजूद रहे।

फैक्ट्री में घुसकर ट्रांसफार्मर की व्वाइल निकाल ले गए चोर

हरिभूमि न्यूज़ ►► बहादुरगढ़

इलाके के औद्योगिक क्षेत्रों की इकाइयों में लगे बिजली के ट्रांसफार्मर चोरों के निशाने पर हैं। बहादुरगढ़ इलाके में कई इकाइयों से ट्रांसफार्मर खोलकर क्वॉइल निकाली जा चुकी है। अब सेक्टर 16 स्थित 1 और फैक्ट्री में चारदात हो गई। प्लॉट मालिक की ओर से पुलिस को शिकायत दे दी गई है।

सेक्टर 6 के निवासी यशपाल का कहना है कि सेक्टर 16 स्थित प्लॉट नंबर 166 में उसने फैक्ट्री बना रखी है। फिलहाल फैक्ट्री का भवन 1 कंपनी को दे रखा है। गत 28

अगस्त की रात को फैक्ट्री भवन में चोरी हुई। अज्ञात चोर परिसर में घुसे और ट्रांसफार्मर को क्षतिग्रस्त करके उसमें से क्वॉइल व ऑयल निकालकर ले गए। अगली सुबह जब फैक्ट्री खुली तो मामले का पता चला। इस वजह से काफी हानि हुई है। उधर, सूचना पाकर पुलिस हरकत में आई और जांच शुरू की। यशपाल की शिकायत पर केस दर्ज किया गया है। मामले की तह तक जाने के लिए आसपास फुटेज चेक की जा रही है। कुछ दिन पहले इसी क्षेत्र में 1 अन्य फैक्ट्री से ट्रांसफार्मर की क्वॉइल सहित काफी सामान चोरी हुआ था।

अबकी बार खनपुर गांव में चार से शुरू होगा दो दिवसीय वार्षिकोत्सव, होगा दंगल

गोगा नवमी पर लगता है आस्था और परंपरा का मेला

■ पांच सितंबर को होने वाले इनामी दंगल में एक लाख इक्कीस हजार रुपये की होगी पहली कुश्ती

हरिभूमि न्यूज़ ►► झज्जर

जिले के गांव खानपुर स्थित गोगा जाहरवीर मंदिर ग्रामीणों की आस्था का प्रमुख केंद्र है। गोगा नवमी के अवसर पर प्रतिवर्ष यहां मेले और कुश्ती दंगल का आयोजन किया जाता है। अबकी बार दो दिवसीय वार्षिकोत्सव चार सितंबर से शुरू होगा। पहले दिन जन्माष्टमी पर्व पर जहां मंदिर परिसर में मेले का आयोजन होगा वहीं अगले दिन पांच सितंबर को

गोगा नवमी के अवसर पर मेले के साथ-साथ विशाल कुश्ती दंगल का आयोजन भी किया जाएगा। मंदिर कमेटी प्रधान अत्तर सिंह ने बताया कि क्षेत्रवासियों के सहयोग आयोजित इस वार्षिकोत्सव के विशाल कुश्ती दंगल में पहली इनामी कुश्ती 1 लाख 21 हजार रुपए, दूसरी कुश्ती 61 हजार रुपए की तथा तीसरी कुश्ती 41 हजार रुपए की होगी। बता दें कि आसपास के गांवों के लोग बड़ी संख्या में मंदिर पहुंचकर गोगा जाहरवीर के दरबार में माथा टेकते हैं और सुख-समृद्धि की कामना करते हैं। वर्षों से चली आ रही यह परंपरा आज भी ग्रामीण संस्कृति और लोक आस्था को जीवंत बनाए हुए है।



झज्जर। मंदिर में स्थापित जहारवीर गोगाजी की प्रतिमा।

सर्पों से रक्षा करने वाले लोकदेवता माने जाते हैं गोगा जाहरवीर

ग्रामीणों में प्रचलित मान्यता के अनुसार गोगा जाहरवीर वीर योद्धा और लोकदेवता थे। उन्हें गोगा पीर, जाहरवीर और जाहरपीर के नाम से भी जाना जाता है। लोककथाओं में उनका संबंध राजस्थान के दक्षिण से बताया जाता है। मान्यता है कि उनका जन्म भाद्रपद कृष्ण पक्ष नवमी को हुआ था। यही वजह है कि गोगा नवमी के दिन उनके मंदिरों में विशेष पूजा-अर्चना की जाती है। लोककथाओं में गोगा जाहरवीर को साहसी, व्यापारि और वक्ता के पक्के वीर के रूप में वर्णित किया गया है। कहा जाता है कि उन्होंने लोगों की रक्षा के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया। उनकी वीरता की गाथाएं ग्रामीण क्षेत्रों में लोकगीतों और किस्सों के माध्यम से पीढ़ी-दर-पीढ़ी आगे बढ़ती रही हैं।

पीढ़ियों से चली आ रही परंपरा

खानपुर गांव स्थित गोगा जाहरवीर मंदिर को लेकर भी ग्रामीणों में गहरी आस्था है। स्थानीय लोगों के अनुसार मंदिर में पूजा-अर्चना की परंपरा लंबे समय से चली आ रही है। गोगा नवमी के अवसर पर श्रद्धालु यहां पहुंचकर पूजा करते हैं तथा अपनी मनोकामना पूरी होने पर प्रसाद चढ़ाते हैं। ग्रामीणों के अनुसार कई परिवार ऐसे हैं जो वर्षों से गोगा नवमी के अवसर पर मंदिर पहुंचते हैं।

अखाड़े में दिखता है पहलवानों का दम

खानपुर के गोगा नवमी मेले की खास पहचान कुश्ती दंगल भी है। मंदिर परिसर में आयोजित होने वाले दंगल में आसपास के गांवों के पहलवान हिस्सा लेते हैं। अखाड़े में पहलवानों की जोर-आजमाइश देखने के लिए बड़ी संख्या में ग्रामीण पहुंचते हैं। यह दंगल केवल खेल प्रतियोगिता नहीं, बल्कि ग्रामीण संस्कृति की पुरानी परंपरा का हिस्सा है।

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी : लोक-संस्कृति और जीवन दर्शन

जन्माष्टमी के दिन हरियाणा के ग्रामीण और शहरी दोनों ही अंचलों में व्रत रखने की एक अत्यंत कठोर और पवित्र लोक परंपरा सदियों से चली आ रही है। श्रद्धालु दिनभर निर्जला या फलाहारी व्रत का संकल्प लेते हैं और जैसे-जैसे भादों की अंधेरी रात में मध्यरात्रि के बारह बजने का समय करीब आता है, हर घर और मंदिर में एक अलौकिक प्रतीक्षा का भाव छा जाता है।



पर्व

आँचल शर्मा

भाद्रपद मास के कृष्ण पक्ष में जब वर्षा ऋतु अपने चरम पर होती है और हरियाली से धरती का कोना-कोना खिल उठता है, तब हरियाणा का जनमानस एक अद्भुत आध्यात्मिक और सांस्कृतिक उल्लास में डूब जाता है। हरियाणा में योगेश्वर की उपासना का समय आता है, जिसने इस पावन भूमि को केवल एक ऐतिहासिक युद्धभूमि नहीं, बल्कि धर्मभूमि का अमर गौरव प्रदान किया। जन्माष्टमी का यह पर्व हरियाणा के लिए केवल एक देवता के जन्म का उत्सव नहीं है, बल्कि यह उस महान मार्गदर्शक के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने का दिन है, जिसने कुरुक्षेत्र की माटी को पूरे विश्व के लिए ज्ञान, दर्शन और निष्काम कर्म का शाश्वत केंद्र बना दिया।हरियाणा के लोक-जीवन और सांस्कृतिक जड़ों में श्रीकृष्ण की उपस्थिति को देखते हैं तो वह अत्यंत सहज और आत्मीय प्रतीत होती है।

हरियाणा की लोक-संस्कृति, साहित्य और संगीत में कृष्ण कथाओं का अत्यंत प्रामाणिक और



समुद्ध इतिहास रा गया है। प्रदेश की सबसे सशक्त लोक नाट्य शैली—सांग और रागिनी परंपरा में कृष्ण के जीवन प्रसंगों, कुरुक्षेत्र के युद्ध और गीता के उपदेश का बहुत ही मार्मिक वर्णन मिलता है। पंडित लखमीचंद, बाजे भगत और मांगे राम जैसे महान लोक-कवियों की समृद्ध वाचिक परंपरा ने अपनी रागनियों के माध्यम से श्रीकृष्ण की लीलाओं और गीता के दार्शनिक ज्ञान को जन-जन की भाषा में ढालकर ग्रामीण चौपालों तक पहुंचाया है। हरियाणा की इसी सांग-परंपरा की एक अत्यंत लोकप्रिय और ओजस्वी रागिनी में गीता के उपदेश का सार बहुत ही सीधे शब्दों में गाते हुए कहा गया है कि 'बाजे शंख नगाड़े भारी कुरुक्षेत्र के मैदान में, कृष्ण जी ने गीता गाई अर्जुन के सुध ज्ञान में।' जब ग्रामीण मंचों पर लोक-कलाकार इन रागनियों को पूरी तल्लीनता से गाते हैं तो ऐसा प्रतीत होता है मानो कृष्ण कोई दूरस्थ देवता नहीं, बल्कि हरियाणा की इसी धरती पर खड़े एक जीवंत मार्गदर्शक हों।लोक-साहित्य की वास्तविक आत्मा उसकी इसी वाचिक परंपरा में निवास करती है, जहां किसी रचना की प्रामाणिकता मुद्रित पृष्ठों से नहीं, बल्कि पीढ़ियों से चली आ रही सामूहिक श्रुति-स्मृति से सिद्ध होती है। इसी निर्बाध प्रवाह में, हरियाणा के ग्रामीण अंचलों, विशेषकर बांगर

और खादर क्षेत्रों के रतजगों में, जन्माष्टमी के अवसर पर महिलाओं द्वारा समवत स्वर में गाए जाने वाले 'जकड़ी', 'पंगट' और 'सोहर' गीत इस वाचिक परंपरा के सबसे प्रामाणिक साक्ष्य बनकर उभरते हैं। इन जकड़ियों में पौराणिक प्रामाणिकता को और अधिक पुष्ट करते हैं।हरियाणावी लोक-दर्शन की एक और बड़ी विशिष्टता ईश्वर के साथ स्थापित होने वाला 'सखा भाव' है, जो माखन चोरी और उलाहना जकड़ियों में बड़ी प्रखरता से मुखर होता है। इन उलाहना गीतों में गोपियां कृष्ण की नटखट हरकतों की शिकायत करते हुए पूरी निश्छलता से गाती हैं: *काली कमली आळा मेरा, मन हर के लेंगा री। मैं तो गई थी जमुना जल भरण नै, मेरी मटक की फोड़ के लेया री। सासरिये में सुगै सास मेरी, मैं तो हो गई आण-निताणी री।* इन पंक्तियों में सास के तानों का भय और 'आण-निताणी' (असहाय) होने का जो भोलापन झलकता है, वह हरियाणावी ग्रामीण परिवेश के सहज मनोविज्ञान को दर्शाता है। ये उलाहना जकड़ियां रास-गीतों के साथ-साथ जन्माष्टमी के जगणियों का अभिनंग रही हैं। इन जकड़ियों के रचयिता भले ही पूर्णतः अज्ञात हों, परंतु 'आळा', 'ल्याय', 'चालैं' जैसी ठेठ क्षेत्रीय शब्दावली ही इनकी वास्तविक कसौटी है। ये किसी आधुनिक

मंदिर दो और मूर्ति एक

झज्जर जिले के बेरी कस्बा में दो मंदिर हैं और इनमें रखी जाने वाली माता भीमेश्वरी देवी की मूर्ति एक ही है। बताते हैं कि प्रारंभ में इस जगह पर घना जंगल था। इसमें ऋषि दुर्वासा रह रहे थे। ऋषि दुर्वासा रोजाना सुबह माता भीमेश्वरी देवी की मूर्ति को बाहरी मंदिर में लाते और दोपहर बाद मूर्ति को भीतरी मंदिर में रख देते थे। मूर्ति को आंतरिक मंदिर से बाहरी मंदिर तक ले जाने की यह प्रक्रिया अभी भी धार्मिक रूप से पालन की जा रही है।

जन्माष्टमी पर हरियाणा के घरों में खीरे को काटकर उसमें से बाल कृष्ण की मूर्ति को प्रतीकात्मक रूप से जन्म दिलाने की एक अनूठी परंपरा देखने को मिलती है, जिसे लोक-विश्वास में 'नाल छेदन' का प्रतीक माना जाता है।

गीतकार की बंद कमरे में रची गई कविताएं नहीं हैं, अपितु ये हरियाणा की मिट्टी से उपजी वे ध्वनियां हैं, जिन्होंने भगवान को स्वर्ग के सिंहासन से उतारकर सीधे गांव की चौपाल और घर के आंगन का हिस्सा बना दिया है। व्रत और अनुष्ठानों की दृष्टि से देखा जाए तो, जन्माष्टमी के दिन हरियाणा के ग्रामीण और शहरी दोनों ही अंचलों में व्रत रखने की एक अत्यंत कठोर और पवित्र लोक परंपरा सदियों से चली आ रही है। श्रद्धालु दिन भर निर्जला या फलाहारी व्रत का संकल्प लेते हैं और जैसे-जैसे भादों की अंधेरी रात में मध्यरात्रि के बारह बजने का समय करीब आता है, हर घर और मंदिर में एक अलौकिक प्रतीक्षा का भाव छा जाता है। जैसे ही चांद निकलता है तो शंखों की ध्वनि और नगाड़ों की गूंज के साथ वतावरण 'नंद के आनंद भयो, जय कन्हैया लाल की' के जयकारों से भर उठता है। इस जन्म के अवसर पर हरियाणा के घरों में खीरे को काटकर उसमें से बाल कृष्ण की मूर्ति को प्रतीकात्मक रूप से जन्म दिलाने की एक अनूठी परंपरा देखने को मिलती है, जिसे लोक-विश्वास में 'नाल छेदन' का प्रतीक माना जाता है। जन्म के तुरंत पश्चात बालगोपाल का पंचामृत से पवित्र अभिषेक कराया जाता है और उद्धे नंद रेशमी वस्त्र पहनाकर श्रद्धापूर्वक झुला झुलाया जाता है। चूंकि कृष्ण को गोपाल कहा जाता है और हरियाणा मूलतः पशुपालकों का प्रदेश है, इसलिए जन्माष्टमी पर यहां के खान-पान और भगवान के नैवेद्य में विशेष शुद्धता और देसी स्वाद झलकता है। ताजी मथी हुई छाछ से निकले सफेद मक्खन, मिश्री, देसी घी के चूरमे, धनिया के

पंजीरी और दूध को कढ़ाकर बनाए गए पेड़े विशेष रूप से अर्पित किए जाते हैं। इसके साथ ही, लोक-विश्वास के अंतर्गत इस दिन गोसेवा का विशेष विधान है, जहां लोग अपनी गायों को स्वच्छ जल से नहलाकर सजाते हैं, हरा चारा खिलाते हैं और माथे पर रोली का तिलक लगाकर आरती उतारते हैं। प्रदेश के अलग-अलग हिस्सों में भौगोलिक और सांस्कृतिक विविधताओं के कारण इस पर्व के स्वरूप में भी थोड़ी भिन्नता दिखाई देती है। हरियाणा के दक्षिणी हिस्से, विशेषकर पलवल, होडल, फरीदाबाद और नूंह के जो क्षेत्र ब्रज भूमि से सटे हुए हैं, वहां रासलीला मंडलियों और ब्रज शैली के कीर्तनों का गहरा प्रभाव देखने को मिलता है। इसके विपरीत, चूंकि भगवान कृष्ण को एक महान मल्ल भी माना जाता है, इसलिए फरीदाबाद के धारिण जैसे कई गांवों में जन्माष्टमी के उपलक्ष्य में विशेष मेलों और कुश्ती के दंगलों का आयोजन किया जाता है। हरियाणा में कृष्ण और जन्माष्टमी की चर्चा कुरुक्षेत्र के बिना सर्वथा अधूरी है। यह केवल एक भौगोलिक स्थान मात्र नहीं है, बल्कि यह मानव के आत्मसंघर्ष की वह भूमि है, जहां मनुष्य अपने कर्तव्य और सांसारिक मोह के बीच खड़ा होता है। कुरुक्षेत्र के ज्योतिसर में उसी ऐतिहासिक अक्षय वट के नीचे जन्माष्टमी पर विशेष आध्यात्मिक अनुष्ठान आयोजित किए जाते हैं। यहां कृष्ण केवल जलशय के नंदलाल नहीं रहते, बल्कि वे एक गंभीर योगेश्वर के रूप में पूजे जाते हैं। श्रीकृष्ण द्वारा दिया गया कर्म का यह संदेश हरियाणा के मेहनतकश समाज के जीवन-दर्शन से हृबहू मेल खाता है। मौसम की परवाह किए बिना खेत में पसीना बहाने वाला किसान हो या देश की सीमाओं पर डटा हरियाणा का जवान, निष्काम कर्म की जो भावना गीता में बताई गई है, वह हरियाणावी जनमानस के स्वभाव में प्राकृतिक रूप से रची-बसी है। जब किसी गांव की चौपाल से कृष्ण की रागनी की कोई पुरानी तान सुनाई देती है या जब कोई महिला अपने घर के आंगन में कान्हा की छठी के गीत गाती है तो ऐसा प्रतीत होता है कि हजारों वर्ष पुरानी वह अलौकिक कथा आज भी हरियाणा की मिट्टी में सांस ले रही है। हरियाणा में श्रीकृष्ण केवल भगवान नहीं हैं, वे इस प्रदेश की आत्मा में रचे-बसे एक शाश्वत मार्गदर्शक हैं।

ग़ज़ल	कर्मचंद केसर	
कुछ ना सै		
गन्दा - मन्दा फूहड़ गाणा कुछ ना सै। लय सुर ताल बिना मुँह बाणा कुछ ना सै।		
मतलब खातर हाथ मित्याणा कुछ ना सै। अपणी बोर - बड़याई गाणा कुछ ना सै।		
रिश्तेदारी हो सै प्यारी बरतण की, बात-बात पै खुँड बजाणा कुछ ना सै।		
सुलफा गाँऊआ मॉंग धतूरा फीम बुरी, दारु का बी पीणा-प्याणा कुछ ना सै।		
बटळी करले चै कितनी धन-माया तौ, उरियो रहजु गेल्लै जाणा कुछ ना सै।		
बाँगगे-बोटे व्चार डोंकटे लिखकै बस, अखबारों में नाम छपाणा कुछ ना सै।		
फास्ट फूड अर् लटरम-पटरम खावैं लोग, होटल का बी ताजा खाणा कुछ ना सै।		
चाल-चलन में खोट मगन मोह माया मैं, सिर टोप्पी चै भगवॉ बाणा कुछ ना सै।		
जूत लगैं और मिलैं मित्र्याई खावण नैं, केसर इसी जगॉ चै पाणा कुछ ना सै।		

ग़ज़ल	रामफल गौड	
मान मरे सै		
जिस माणस का मान मरे सै। जिन्दा ओ इनसान मरे सै।		
बेदोस्सी नै सजा मिलै तो, न्यूँ समझो संविधान मरे सै।		
मात पिता हों मरे बराब्बर, जिनका पूत जवान मरे सै।		
खड़जंग माट्ठे सै जिस घर म्हं, बच्चों की मुस्कान मरे सै।		
ओ जिन्दा बी मरे बराब्बर, जिसका दीन ईमान मरे सै।		
खेत रोवते बिलख बिलख जिब, तंगवी भोग किसान मरे सै।		
जात धरम पै कतल हुवै जिब, मणसपणे कां ग्यान मरे सै।		
खतम हुवै सै वा संसकिरती, जिसकी मूल जबांन मरे सै।		
मोत मणस की इब न्यूँ रामफल, सरइय पै ज्यूँ स्वान मरे सै।		

haribhoomisahitya@gmail.com पर आप अपनी रचनाएं भेज सकते हैं।

बालपन

आनंद को खोजने के लिए दूर जाने की जरूरत नहीं, वह हमारे अतीत की किसी 'खोही' में भी छिपा हो सकता है

याद आता है बचपन की 'खोही' और बारिश में भीगा हुआ आनंद

लोकजीवन

रवि यादव

भले ही आज जमाना बहुत बदल गया है, सुविधाएं बढ़ गई हैं और जीवन की रफ्तार पहले से कहीं तेज हो गई है, लेकिन बचपन की कुछ यादें ऐसी होती हैं, जो समय के साथ धुंधली नहीं पड़ती। वे अचानक किसी दृश्य, किसी वस्तु, किसी खुशबू या बारिश की किसी बूंद के साथ फिर से हमारे सामने आ खड़ी होती हैं। ऐसी ही एक याद है - हमारे बचपन की 'खोही' या 'खोली'। आज की पीढ़ी शायद इस शब्द से परिचित न हो, लेकिन हमारे जैसे लोगों के लिए 'खोही' केवल सुतली से बनी बोरी नहीं थी और न ही प्लास्टिक से बना खाद का कट्टा था। वह खोही हमारे बचपन का हिस्सा थी, हमारी शरातों की साथी थी और कभी-कभी तो हमारे लिए छतरी का काम भी करती थी। मुझे आज भी याद है कि हमारे स्कूलों में उस समय टाट-पट्टी पर्याप्त संख्या में नहीं हुआ करती थी। इसलिए हम घर से सुतली से बनी बोरी या प्लास्टिक का कट्टा लेकर स्कूल जाया करते थे। स्कूल पहुंचते ही सबसे पहला काम होता था अपनी परांद की जगह तयशाना। जैसे ही जगह मिलती, हम अपनी बोरी वहां बिछा देते और उस पर अपना बस्ता रख देते थे। धीरे-धीरे वह जगह हमारे लिए किसी छोटे से 'प्लाट' की तरह हो जाती थी। मन में एक अदृश्य बोर्ड टंगा होता था - "यह मेरी जगह है, यहां कोई नहीं बैठेगा।" अगर कोई

दूसरा बच्चा हमारी जगह पर बैठ जाता तो मामला लगभग जमीन के विवाद जैसा ही जाता था। देरती अपनी जगह थी, लेकिन अपनी बोरी और अपनी जगह की हिफाजत उससे भी बड़ी जिम्मेदारी हुआ करती थी। उस समय हमारे पास आज जैसी सुविधाएं नहीं थीं,

लेकिन सुविधाएं बहुत थीं। साधन सीमित थे, मगर कल्पनाएं असीमित थीं। एक साधारण बोरी भी कभी बैठने की चटाई बन जाती थी, कभी सामान रखने की जगह और बारिश आ जाए तो वही बोरी खोही के रूप में हमारे सिर का ताज बन जाती थी। हमारे अहीरवाला क्षेत्र में इसे 'खोही' कहा जाता था। अलग-अलग क्षेत्रों में इसके अलग-अलग नाम रहे होंगे। यही तो हमारे देश की खुबसूरती है कि एक ही वस्तु अलग-अलग इलाकों में अलग नाम और अलग स्मृतियों के साथ जीवित रहती है। किसी के लिए यह बोरी होगी, किसी के लिए कट्टा, किसी के लिए कोई और स्थानीय नाम - लेकिन इससे जुड़ी बचपन की भावनाएं शायद लगभग एक जैसी ही होंगी। आज जब मैं पीछे मुड़कर देखता हूँ तो लगता है कि उस दौर में हमारे पास चीजें कम थीं, लेकिन उन्हें आनंद में बदलने की कला खूब थी। एक छोटी-सी चीज में खेल दूँद लेना, बारिश में भीगना, मिट्टी में पैर सानना, देरती के साथ हँसना और मामूली-सी चीज को भी खास बना देना, शायद यही बचपन था।

आज का दिन भी मेरे लिए कुछ ऐसा ही रहा। बारिश हो रही थी। छतरी घर में रखी थी और मैं उसे लेकर निकल सकता था, लेकिन मन ने कहा कि आज बारिश को महसूस किया जाए। आज खुशियाँ से उन्माद आनंद चाहिए था। और जब आनंद की बात आती है तो बचपन अपने आप सामने आ जाता है। नजर पड़ी एक चूरी के कट्टे पर। अचानक बचपन की वही 'खोही' याद आ गई। मैंने उसी अंदाज में उसे तैयार किया, जैसे बचपन में 'खोही' घर पर रखकर बारिश से बचा करते थे। कुछ ही क्षणों में वह कट्टा मेरे सिर पर आ और मैं बारिश के बीच चल रहा था। उस पल लगा जैसे उस ने कुछ देर के लिए पीछे लौटने का रास्ता खोल दिया हो। चहरे पर बारिश की बूंदें थीं, लेकिन मन में बचपन की हंसी थी। आपस आपस आधुनिक दुनिया थी, लेकिन भीतर वही पुराना स्कूल, वही बोरी, वही अपनी जगह और वही देरती की आवाजें थीं। कभी-कभी जिंदगी में आनंद पाने के लिए बड़ी चीजों की जरूरत नहीं होती।

एक साधारण बोरी भी कभी बैठने की चटाई बन जाती थी, कभी सामान रखने की जगह और बारिश आ जाए तो वही बोरी खोही के रूप में हमारे सिर का ताज बन जाती थी।

महंशे साधन, बड़े पर्यटन स्थल या शानदार व्यवस्थाएं ही खुशी का कारण नहीं हैं। आनंद तो हमारे आपसपास बिखरा पड़ा है, बस उसे देखने वाली नजर चाहिए। एक पुरानी बोरी हमें बचपन में पहुंचा सकती है, बारिश की कुछ बूंदें पुरानी गलियों की याद दिला सकती हैं और कोई भूली-बिसरी वस्तु हमें उन लोगों तक ले जा सकती है, जिनके साथ हमने जीवन के सबसे सुंदर दिन बिताए थे। आज की भागती-दौड़ती जिंदगी में शायद हमें फिर से उसी बच्चे की जरूरत है, जो छोटी-सी चीज में बड़ी खुशी खोज लेता था। इसलिए अपनी पुरानी यादों को केवल याद मत कीजिए, कभी-कभी उन्हें जी भी लीजिए। बारिश हो तो भीगिए, मिट्टी की खुशबू महसूस कीजिए, बचपन की कोई वस्तु हाथ में उठाइए और अपने भीतर छिपे उस बच्चे से मिलिए, जो आज भी कहीं न कहीं आपका इंतजार कर रहा है। आनंद को खोजने के लिए दूर जाने की जरूरत नहीं है। वह हमारे अतीत की किसी 'खोही' में भी छिपा हो सकता है। बस जरूरत है, उसे पहचानने की। आनंद दूँदते रहिए और आनंदित रहिए।

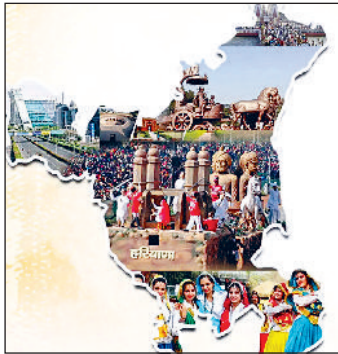
हरियाणावी का संस्कृत और वैदिक साहित्य से गहरा नाता



कलाकार

अंकुर शर्मा

हरियाणा केवल भारत के राजनीतिक और सांस्कृतिक इतिहास का ही नहीं, बल्कि उसकी प्राचीन भाषिक परंपरा का भी एक अत्यंत महत्वपूर्ण केंद्र रहा है। सरस्वती और दृषद्वती नदियों के मध्य स्थित यह क्षेत्र वैदिक सभ्यता की प्रमुख कर्मभूमि माना जाता है। अनेक विद्वानों का मत है कि ऋग्वेद सहित वैदिक साहित्य के अनेक मंत्रों की रचना इसी सांस्कृतिक परिवेश में हुई। यही कारण है कि हरियाणा की लोकभाषा और उसकी विभिन्न बोलियों में आज भी प्राचीन भारतीय भाषिक परंपरा की स्पष्ट झलक दिखाई देती है। बांगरू, अहीरवाटी, बागड़ी, कौरवी तथा मेवाती जैसी बोलियाँ केवल ग्रामीण संप्रेषण का माध्यम नहीं हैं, बल्कि भारतीय भाषाओं के विकासक्रम की जीवंत कड़ियाँ भी हैं। भाषावैज्ञानिकों के अनुसार हरियाणवी बोलियाँ मुख्यतः शीरसेनी अपभ्रंश से विकसित पश्चिमी हिंदी समूह की सदस्य हैं। यह वही भाषिक क्षेत्र है जिसने आगे चलकर खड़ी बोली, बज्ज, कन्नौजी तथा हरियाणवी जैसी बोलियों को जन्म दिया। इसलिए हरियाणवी और संस्कृत का संबंध प्रत्यक्ष न होकर एक दीर्घ भाषिक परंपरा के माध्यम से स्थापित होता है। इस दृष्टि से हरियाणवी में संस्कृत की अनेक ध्वनियाँ, शब्द, व्याकरणिक संरचनाएं तथा सांस्कृतिक



अभिव्यक्तियाँ आज भी सुरक्षित दिखाई देती हैं। ध्वन्यात्मक स्तर पर हरियाणावी अनेक प्राचीन विशेषताओं को संरक्षित किए हुए है। उदाहरण के लिए संस्कृत के मूर्धन्य 'ण' का प्रयोग हरियाणवी में आज भी व्यापक रूप से मिलता है। जहाँ मानक हिंदी में अनेक स्थानों पर 'ण' के स्थान पर 'न' का प्रयोग होने लगा है, वहीं हरियाणवी में पाणी, माणस, घणा, बाणी जैसे शब्द सहज रूप से बोले जाते हैं। यह विशेषता प्राचीन संस्कृत तथा शीरसेनी परंपरा की स्मृति को जीवित रखती है। इसी प्रकार कुछ स्थानों पर संयुक्त व्यंजनों के उच्चारण और ध्वनि-संरचना में भी प्राचीन भाषिक प्रवृत्तियों का प्रभाव दिखाई देता है। शब्द-संपदा की दृष्टि से भी हरियाणवी अत्यंत समृद्ध है। ग्रामीण जीवन में आज भी अनेक ऐसे शब्द प्रचलित हैं जिनकी जड़ें संस्कृत में मिलती हैं। उदाहरणस्वरूप 'गोधूम' से 'गेहूँ', 'क्षेत्र' से 'खेत', 'दुग्ध' से 'दूध', 'धुत' से 'घी',

'क्ष्मा' से 'भाई', 'पितृ' से 'पितर' तथा 'मातृ' से 'माता' जैसे शब्द भाषिक निरंतरता के सशक्त उदाहरण हैं। इन शब्दों का उच्चारण समय के साथ सरल अवश्य हुआ है, किंतु उनका मूल संस्कृत से जुड़ा हुआ है। यह परिवर्तन भाषा की स्वाभाविक विकास प्रक्रिया का परिणाम है, न कि उसके मूल स्वरूप के लोप का। व्याकरणिक स्तर पर भी हरियाणवी में अनेक ऐसी विशेषताएँ मिलती हैं जो उसे प्राचीन भारतीय भाषिक परंपरा से जोड़ती हैं। अनेक क्रियाएँ और धातु-आधारित शब्द संस्कृत से विकसित रूपों में आज भी प्रयुक्त होते हैं। उदाहरण के लिए 'करना' का संबंध संस्कृत की 'कृ' धातु तथा 'जाना' का संबंध 'गम्' धातु से माना जाता है। यद्यपि इनका वर्तमान रूप प्राकृत और अपभ्रंश के विभिन्न चरणों से होकर विकसित हुआ है, फिर भी इनके मूल स्रोत संस्कृत में निहित हैं। यही भाषिक निरंतरता हरियाणवी की ऐतिहासिक महत्ता को रेखांकित करती है। हरियाणा की विभिन्न बोलियों में संस्कृत के प्रभाव का स्वरूप भी अलग-अलग दिखाई देता है। मध्य हरियाणा की बांगरू बोली अपेक्षाकृत संतुलित और व्यापक रूप से प्रचलित है। दक्षिण हरियाणा की अहीरवाटी में राजस्थानी प्रभाव के साथ संस्कृत मूल के अनेक शब्द सुरक्षित हैं। उत्तर-पूर्वी क्षेत्र की कौरवी बोली में संयुक्त व्यंजनों के उच्चारण तथा ध्वनि-बल की विशेष प्रवृत्तियाँ देखने को मिलती हैं। इसी प्रकार पश्चिमी हरियाणा की बागड़ी और दक्षिणी क्षेत्र की मेवाती में भी स्थानीय प्रभावों के साथ संस्कृत-प्राकृत परंपरा की अनेक विशेषताएँ विद्यमान हैं।

कभी सरस्वती के तट पर गूंजने वाली वैदिक वाणी की प्रतिध्वनि आज भी हरियाणा के खेतों, चौपालों, लोकगीतों और रागनियों में अनुभव की जा सकती है।

इससे स्पष्ट होता है कि हरियाणा की प्रत्येक बोली भारतीय आर्य भाषाओं के विकासक्रम का अपना विशिष्ट स्वरूप प्रस्तुत करती है। हरियाणवी का संस्कृत से संबंध केवल भाषा तक सीमित नहीं है, बल्कि सांस्कृतिक और दार्शनिक स्तर पर भी अत्यंत गहरा है। वेदों और उपनिषदों में वर्णित प्रकृति के प्रति सम्मान, श्रम की महिमा, सत्य, कर्तव्य, पारिवारिक मर्यादा तथा लोककल्याण की भावना हरियाणा के लोकजीवन में आज भी स्पष्ट दिखाई देती है।लोकगीतों, रागनियों, सांग साहित्य, कहावतों और मुहावरों में इन जीवन मूल्यों की सहज अभिव्यक्ति मिलती है। अनेक लोककथाएँ और लोकविश्वास भारतीय दार्शनिक परंपरा की स्मृतियों को सरल लोकभाषा में संजोए हुए हैं। हरियाणा के सांग साहित्य और लोककवियों की रचनाओं में कर्म, धर्म, लोकमंत्र और ईश्वर के प्रति सम्पूर्ण जैने भाव-बार-बार व्यक्त होते हैं। ये वही मूल्य हैं जिनका उल्लेख वैदिक तथा उत्तरवैदिक साहित्य में मिलता है। ग्रामीण समाज में प्रचलित अनेक लोकोक्तियाँ अनुभवजन्य ज्ञान का

ऐसा रूप प्रस्तुत करती हैं, जिनमें भारतीय दार्शनिक चिंतन की प्रतिध्वनि सुनाई देती है। इस प्रकार हरियाणवी लोकसंस्कृति प्राचीन भारतीय ज्ञानपरंपरा की सशक्त वाहक सिद्ध होती है। यह भी ध्यान रखना आवश्यक है कि भाषाओं का विकास निरंतर परिवर्तन की प्रक्रिया है। इसलिए हरियाणवी को संस्कृत की प्रत्यक्ष उत्तराधिकारी कहना भाषावैज्ञानिक दृष्टि से पूर्णतः उचित नहीं होगा। अधिक सटीक यह कहना होगा कि हरियाणवी भारतीय आर्य भाषाओं की उस दीर्घ विकास-शृंखला की एक महत्वपूर्ण कड़ी है, जिसकी प्रारंभिक आधारभूमि वैदिक संस्कृत रही है। इसीलिए हरियाणवी में संस्कृत के अनेक ध्वन्यात्मक, शब्दगत, व्याकरणिक तथा सांस्कृतिक तत्त्व आज भी सुरक्षित दिखाई देते हैं। निरसंदेह हरियाणा की क्षेत्रीय बोलिया अनेक भीतर एक गौरवशाली भाषिक और सांस्कृतिक इतिहास समेटे हुए हैं। उनका शब्द-भंडार, उच्चारण, व्याकरण तथा लोकसाहित्य भारतीय भाषाओं की प्राचीन परंपरा से उनके गहरे संबंध का प्रमाण प्रस्तुत करते हैं। कभी सरस्वती के तट पर गूंजने वाली वैदिक वाणी की प्रतिध्वनि आज भी हरियाणा के खेतों, चौपालों, लोकगीतों और रागनियों में अनुभव की जा सकती है। यही कारण है कि हरियाणवी बोलियों को केवल क्षेत्रीय बोली मानकर सीमित कर देना उनके ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्त्व का उचित मूल्यांकन नहीं होगा। वे भारतीय भाषिक विरासत की अमूल्य धरोहर हैं और हमारी सांस्कृतिक अस्मिता की सशक्त संरक्षक भी।

और पात्र लोगों को समय-समय पर रक्तदान के लिए आगे आना चाहिए ताकि किसी जरूरत में मदद की सहायता हो सके। रक्तदान करने से आत्मिक संतुष्टि भी मिलती है।

25वें दिन भी जारी रही सफाई कर्मचारियों की हड़ताल, शहर में हर ओर लगे कूड़े के ढेर सरकार ने 17 मांगों पर जताई सहमति लागू करने से कर रही अनावश्यक देरी

कर्मचारी नेताओं ने मांगें पूरी होने तक हड़ताल जारी रखने की दी चेतावनी

हरिभूमि न्यूज ►► बहादुरगढ़

सफाई कर्मचारियों की हड़ताल रविवार को 25वें दिन भी जारी रही। कर्मचारियों ने नगर परिषद के गेट पर धरना देकर नारेबाजी करते हुए अपनी मांगों दोहराई।

कर्मचारियों की प्रमुख मांगों में 13 मई 2026 के समझौते को लागू करना, कच्चे कर्मचारियों को पक्का करना, ठेका प्रथा समाप्त करना, हाईकोर्ट व सुप्रीम कोर्ट के फैसलों को लागू करना और एचकेआरएन को भंग करना शामिल हैं। कर्मचारियों का कहना है कि 17 मांगों पर सहमति बनने के बावजूद सरकार की ओर से उन्हें लागू करने संबंधी प्रयास जारी नहीं किया गया। गत 6 अगस्त से शुरू हुई तीन दिवसीय हड़ताल को समाधान नहीं निकलने पर लगातार आगे बढ़ाया गया। अब यह 25वें दिन तक पहुंच चुकी है। इकाई प्रधान राजेश बालगुहेर की अध्यक्षता में हुए धरने में संगठन के



बहादुरगढ़। नगर परिषद के गेट पर धरनारत सफाई कर्मचारी। फोटो: हरिभूमि

बीमारी फैलने की आशंका

लंबे समय से सफाई कार्य प्रभावित होने के कारण शहर गंदगी से सड़ रहा है। गलियों, सड़कों और चौक-चौराहों पर गंदगी जमा होने से दुर्गंध फैल रही है। लोगों को परेशानी के साथ बीमारी फैलने की आशंका भी बनी हुई है। शहरवासियों का कहना है कि कर्मचारियों की मांगों और सरकार के रुख के बीच चल रहे गतिरोध का असर आम लोगों पर नहीं पड़ना चाहिए। दोनों पक्षों को बातचीत कर जल्द समाधान निकालना चाहिए।

पदाधिकारियों के साथ बड़ी संख्या में सफाई कर्मचारी मौजूद रहे।

कर्मचारियों का कहना है कि आंदोलन उनकी मजबूरी है। मांगों

पर पहले सहमति बन चुकी है, लेकिन उसे लागू नहीं किया गया।

कर्मचारियों ने कहा कि मांगें पूरी होने तक आंदोलन जारी रहेगा।

तीन दिन और बढ़ी हड़ताल, वाल्मीकि समाज ने दिया आंदोलन को समर्थन

कर्मचारी बोले, सरकार गंभीर नहीं आंदोलन करना हमारी मजबूरी

हरिभूमि न्यूज ►► झज्जर

नगर पालिका कर्मचारी संघ व सब कर्मचारी संघ हरियाणा के आह्वान पर नगर परिषद के सफाई कर्मचारियों की हड़ताल रविवार को 25वें दिन भी जारी रही। हड़ताल की अध्यक्षता इकाई प्रधान शिवम चांवरिया ने की, जबकि मंच संचालन इकाई सचिव विकास उज्जैनवाल ने किया। इकाई प्रधान शिवम चांवरिया ने बताया कि राज्यव्यापी हड़ताल को तीन दिन और आगे बढ़ाया गया है। उन्होंने कहा कि हड़ताल करना उनकी मजबूरी है। सरकार इस मामले में गंभीरता नहीं बरत रही है। कई मांगों पर पहले ही सहमति बन चुकी है, लेकिन सरकार उन्हें लागू करने में बेवजह देरी कर रही है। सफाई कर्मचारियों के समर्थन में सिलानी गेट से वाल्मीकि समाज के लोग धरनास्थल पर पहुंचे जिसमें वाल्मीकि समाज के प्रधान अभिषेक



झज्जर। नगरपरिषद परिसर में धरने पर बैठे सफाई कर्मचारी। फोटो: हरिभूमि

ये रहे उपस्थित

इस मौके पर जिला सचिव गौरव, ऑडिटर कृष्ण, सलाहकार सुरेश, सह सचिव बबली, महिला उप प्रधान कमलेश, प्रचार सुचारक मनीषा, शीतल, राजी, दया, सुष्मा, सुमित्रा, सीमा, अंजु, सुरेश, रविंद्र, विक्रम, नवीन, अमित, मुकेश, विनोद, दुष्यंत, रिचु, गीता, रामरती, संतोष, बबिता, सुनीता, रेखा, उष्मा, राजेश, शिखर, रमन, सुनील, विजय, हरिओम, जितेंद्र, मनोज सहित अन्य भी उपस्थित रहे।

उर्फ गोल्ड, बंसी, डॉक्टर मोहन, मास्टर रिंकु, राकेश पेंटर, रमेश फौजी, जोगिंद्र, सुरेंद्र, ललित, राकेश बिड़लान, नीटू, सत्यवान आदि

शामिल रहे। उन्होंने कर्मचारियों को संबोधित करते हुए उनकी मांगों का समर्थन किया और हरसंभव मदद देने का आश्वासन दिया।



झज्जर। खिलाड़ियों के साथ कोच हितेश देशवाल व प्राचार्या प्रीति गोयल।

संस्कारम स्कूल में सीबीएसई नॉर्थ जोन बालिका बॉक्सिंग चैंपियनशिप का आगाज

पांच राज्यों के 300 स्कूलों की 400 खिलाड़ी दिखाएंगी दम, तीन सितंबर तक चलेगी प्रतियोगिता

हरिभूमि न्यूज ►► झज्जर

संस्कारम पब्लिक स्कूल खातीवास में सीबीएसई नॉर्थ जोन बालिका वर्ग बॉक्सिंग चैंपियनशिप का शुभारंभ हुआ। उद्घाटन समारोह के दौरान विद्यालय परिसर उत्साह से सराबोर नजर आया। पांच राज्यों से पहुंची सैकड़ों बालिका खिलाड़ियों, प्रशिक्षकों और अधिकारियों की मौजूदगी ने आयोजन को विशेष बना दिया। कार्यक्रम में मुख्यातिथि के रूप में कोच हितेश देशवाल तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में विद्यालय की प्राचार्या डॉक्टर प्रीति गोयल उपस्थित रही। अतिथियों ने खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन करते हुए

उन्हें खेल भावना के साथ बेहतर प्रदर्शन करने के लिए प्रेरित किया। विद्यालय के स्पोर्ट्स एचओडी आनंद यादव ने बताया कि चैंपियनशिप में हरियाणा, पंजाब, उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश और जम्मू-कश्मीर सहित पांच राज्यों के करीब 300 स्कूलों की लगभग 400 बालिका खिलाड़ी भाग ले रही हैं। प्रतियोगिता 29 अगस्त से शुरू होकर 3 सितंबर तक चलेगी। इस दौरान विभिन्न भार वर्गों में खिलाड़ी अपने मुकों का दम दिखाते हुए जीत के लिए मुकाबला करेंगी। संस्कारम ग्रुप के चेयरमैन डॉक्टर महिपाल ने कहा कि खेल केवल जीत और हार का माध्यम नहीं, बल्कि अनुशासन, आत्मविश्वास और संघर्ष की भावना विकसित करने का सशक्त जरिया है। उन्होंने सभी प्रतिभागी खिलाड़ियों से पूरी निष्ठा और खेल भावना के साथ मुकाबले में उतरने का आह्वान किया तथा उनके उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं दीं।

कार्यकर्ताओं से मिले पूर्व सांसद बिजेंद्र सिंह, भाजपा पर साधा निशाना

हरिभूमि न्यूज ►► झज्जर

रविवार को क्षेत्र के गांव जहांगीरपुर में पूर्व सांसद एवं अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के विदेशी मामलों विभाग के उपाध्यक्ष बिजेंद्र सिंह कार्यकर्ताओं से रूबरू हुए और सद्भाव यात्रा में सहयोग और भागीदारी के लिए सभी का आभार जताया। इस दौरान अपने संबोधन में उन्होंने विभिन्न राजनीतिक एवं सामाजिक मुद्दों पर अपने विचार रखे और भाजपा सरकार पर जमकर निशाना साधा। उन्होंने आरोप लगाया कि भाजपा ने संवैधानिक संस्थाओं पर कब्जा कर लिया है और अब न्यायपालिका को लेकर भी सवाल उठाने लगे हैं। उन्होंने कहा कि देश में बेरोजगारी लगातार गंभीर समस्या बनी हुई है, जबकि शिक्षा व्यवस्था को भी योजनाबद्ध तरीके से कमजोर करने का प्रयास किया जा रहा है। उन्होंने एसआईआर का मुद्दा भी उठाया और मतदाता सूचियों में कथित गड़बड़ियों को लेकर सवाल खड़े किए। इस दौरान पूर्व केंद्रीय मंत्री



झज्जर। कार्यक्रम के दौरान उपस्थित उपस्थित पूर्व सांसद बिजेंद्र सिंह एवं अन्य। फोटो: हरिभूमि

वीरेंद्र सिंह डुमरखां, पूर्व मंत्री योगानंद शास्त्री, पूर्व विधायक डॉक्टर वीरेंद्र पाल, गुलिया खाप 84 के प्रधान सुनील गुलिया, नीटी गहलोत, यशवंत महलावत, उदय भान पूनिया, जितेंद्र जांगड़ा, एडवोकेट विनोद गुर्जर, संतराम गुर्जर, एडवोकेट जगशेर कादियान, लीला पहलवान, भव गहरावत, मेहर सिंह, बलवान सिंह सहित अन्य भी मौजूद रहे।

कार की टक्कर से युवक हुआ गंभीर रूप से घायल

बहादुरगढ़। झज्जर रोड पर रविवार को कार की टक्कर से एक युवक गंभीर रूप से घायल हो गया। उसे बहादुरगढ़ के नागरिक अस्पताल में भर्ती कराया गया। वहां से उसे पीजीआई रोहतक रेफर कर दिया गया। युवक की हालत गंभीर है। सूचना पाकर सेक्टर 6 थाने से पुलिस अस्पताल में पहुंची लेकिन घायल बयान देने की स्थिति में नहीं था। बड़े भाई जोगेंद्र के बयान पर पुलिस ने अज्ञात कार चालक के खिलाफ केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

बाबू बालमुकुंद गुप्त की स्मृति में कार्यक्रम 18 को

तैयारियों पर हुई चर्चा, सौंपी गई जिम्मेदारियां

हरिभूमि न्यूज ►► झज्जर

बाबू बालमुकुंद गुप्त पत्रकारिता एवं साहित्य संरक्षण परिषद् रेवाड़ी के तत्वावधान में आगामी 18 सितंबर को हिंदी पत्रकारिता के मसीहा बाबू बालमुकुंद गुप्त की 119वीं पुण्यतिथि पर जिला झज्जर में आयोजित होने वाले राज्य स्तरीय कार्यक्रम की तैयारियों को लेकर बैठक आयोजित की गई।



झज्जर। बैठक के दौरान उपस्थित नरेश चौहान, डॉक्टर जयभगवान शर्मा एवं अन्य।

बैठक में कार्यक्रम की रूपरेखा, विभिन्न व्यवस्थाओं तथा आयोजन को सफल बनाने के लिए की जाने वाली तैयारियों पर विस्तार से चर्चा की गई। कार्यक्रम के लिए अलग-

अलग कार्यों की जिम्मेदारियां निर्धारित की गई। बैठक की अध्यक्षता परिषद् के संरक्षक नरेश चौहान ने की। इस बार झज्जर में होने वाले राज्यस्तरीय कार्यक्रम के



झज्जर। बीएलओ के समक्ष मतदाता सूची से संबंधित दावे एवं आपत्तियां दर्ज करवाते हुए नागरिक। फोटो: हरिभूमि

बूथ पर पहुंचे मतदाता, दर्ज कराए दावे और आपत्तियां

मतदाता सूची को 100 फीसदी शुद्ध बनाने के लिए जिले में चल रहा विशेष अभियान

हरिभूमि न्यूज ►► झज्जर

एसआईआर अभियान के तहत मतदाता सूची को शुद्ध, पारदर्शी और अद्यतन बनाने के लिए जिले में विशेष अभियान जारी है। अभियान के दूसरे दिन रविवार को भी जिले के सभी मतदान केंद्रों पर बीएलओ सुबह नौ बजे से सांय पांच बजे तक

मौजूद रहे। इस दौरान नागरिकों ने मतदाता सूची की जांच करने के साथ-साथ नाम जोड़ने, विवरण में संशोधन और अपात्र नाम हटाने से संबंधित दावे एवं आपत्तियां दर्ज कराईं। डीसी एवं जिला निर्वाचन अधिकारी वर्षा खिंगवाल ने बताया कि भारत निर्वाचन आयोग द्वारा जारी संशोधित शैड्यूल के अनुरूप 30 सितंबर तक दावे व आपत्ति दर्ज करने का मौका दिया गया है, जबकि 28 अक्टूबर तक दावे आपत्तियों का निपटान सुनिश्चित किया जाएगा और 6 नवंबर को अंतिम मतदाता सूची का प्रकाशन होगा।

चरस सहित पकड़ा गया आरोपी एक दिन के पुलिस रिमांड पर



झज्जर। पकड़ा गया आरोपी पुलिस टीम के साथ।

आरोपी से 1.35 किलो चरस पकड़ी

आरोपी की नियमानुसार तलाशी लेने पर उसके कब्जे से 1 किलो 35 ग्राम नशीला पदार्थ चरस बरामद हुआ। आरोपी के खिलाफ नियमानुसार कार्यवाई करते हुए स्थानीय अदालत में पेश किया गया। जहां से आरोपी को पूछताछ के लिए एक दिन के पुलिस रिमांड पर लिया गया है।

सट्टा खाईवाली के आरोप में पुलिस ने युवक को किया गिरफ्तार

बहादुरगढ़। पुलिस की एंटी नारकोटिक सेल ने लाइनपार से रविवार को सट्टा खाईवाली करने के आरोप में एक युवक को गिरफ्तार किया है। आरोपी की पहचान रोहतक के निवासी साहिल के रूप में हुई है। पुलिस की टीम ने आरोपी के कब्जे से 750 रुपये की सट्टा राशि, सट्टा पच्ची और पेन बरामद किया है। आरोपी के खिलाफ थाना लाइनपार में केस दर्ज किया गया है। पुलिस अधिकारी का कहना है कि आगे भी इस तरह का अभियान चलता रहेगा।

नहीं थम रहे वाहन चोरी के मामले

तीन और लोगों ने थाने में दर्ज कराई वाहन चोरी की शिकायतें, पुलिस केस दर्ज कर मामलों की छानबीन में जुटी

हरिभूमि न्यूज ►► बहादुरगढ़

इलाके में वाहन चोरी के मामले नहीं थम रहे। मौका लगते ही सड़क किनारे खड़े वाहनों पर हाथ साफ किया जा रहा है। आए दिन लोग थानों में वाहन चोरी की शिकायतें दर्ज करा रहे हैं। अब 3 और लोगों ने शिकायतें दी हैं।

आसौदा के निवासी निशांत का कहना है कि वह पीएचडी की पढ़ाई कर रहा है। गत 28 अगस्त को उसने ब्रिगेडियर हौशियार सिंह मेट्रो स्टेशन के नीचे बाइक खड़ी की और दिल्ली एक्स चला गया। काम

निपटाने के बाद वापस आया तो बाइक नहीं मिली। काफी तलाश की लेकिन कुछ पता नहीं चला। इस शिकायत पर सेक्टर 6 थाना पुलिस ने केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। वहीं, नूना माजरा के निवासी देवानंद ने गांव के अड्डे पर अपनी बाइक खड़ी की और एचएल सिटी में चला गया। काम निपटाने के बाद वापस आया तो बाइक नहीं मिली। इसी तरह लाइनपार के इंद्रेश का कहना है कि वह परनाला स्थित फैक्ट्री में काम करता है। गत 27 अगस्त को वह फैक्ट्री में गया और बाइक बाहर खड़ी कर दी। कुछ समय बाद बाहर निकला तो बाइक नहीं थी। कोई अज्ञात शख्स चुरा ले गया। इन दोनों शिकायतों पर सदर थाना और लाइनपार थाना पुलिस ने केस दर्ज कर छानबीन शुरू कर दी है।

हरिभूमि आवश्यक सूचना

जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नंबरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सएप करें :-

बहादुरगढ़ : सुरजमल वाली गली, गणपति ट्रेवल्स के ऊपर, नजदीक टेक्सटी स्टैंड, बहादुरगढ़

झज्जर :- पुराना बाई खाना रोड, शिव चौक, झज्जर

फोन : 8295738500, 8814999142, 8295157800, 9253681005

मृत्यु अंत नहीं है

मृत्यु कभी भी अंत नहीं हो सकती मृत्यु एक पथ है, जीवन एक यात्रा है आत्मा पथ प्रदर्शक है।

हरिभूमि

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

इस शोकाकुल समय में हम आपके सहभागी हैं।

तेरहवीं/श्रद्धान्जलि/शोक संदेश

आप अर्पित कीजिये अपने श्रद्धा-सुमन **हरिभूमि** के माध्यम से

साईज	संस्करण	विशेष छूट राशि
5 × 8 से.मी	स्थानीय संस्करण के अन्दर के पृष्ठ पर	रु. 2500/-
10 × 8 से.मी		रु. 3000/-

+5% GST Extra

नोट : विशेष छूट राशि केवल उपर्युक्त टाईज पर मान्य। अन्य किसी साईज के लिए कोई रेट लागू।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें

झज्जर : हरिभूमि कार्यालय, पुराना बाई खाना रोड, शिव चौक, फोन : 8295876400

बहादुरगढ़ : सुरजमल वाली गली, रोहतक रोड, गणपति ट्रेवल्स के ऊपर, 8295852900